खण्ड-343, अंक-5
बुधवार, 10 माघ, शक संवत् 1901
(30 जनवरी, 1980 ई0)

उत्तर प्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

खण्ड 343 में 10 अंक है

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

मुद्रक:

निदेशक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, लखनऊ , उत्तर प्रदेश (भारत)

1979

मूल्य : बिना महसूल 25 पैसे, महसूल सहित 31 पैसे |

वार्षिक चन्दा : बिना महसूल 10 रुपये, महसूल सहित 12 रुपये |

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ-संख्या
उपस्थित सदस्य	.. 457–461
राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि	.. 461
आज प्रश्नों का समय स्थगित किये जाने का प्रस्ताव (स्वीकृत)	.. 461
भूतपूर्व सदस्य, श्री त्रिलोकी सिंह के निधन पर शोकोद्गार ..	.. 461–467
भूतपूर्व सदस्य, कैप्टेन मोहन लाल व श्री अब्दुल मुईज खां के निधन पर शोकोद्गार	.. 467–469
स्व० श्री त्रिलोकी सिंह के सम्मान में सदन स्थगित किये जाने का प्रस्ताव (स्वीकृत) ..	469–470

संसद भवन

उत्तर प्रदेश विधान सभा

बुधवार, दिनांक 30 जनवरी, 1980

विधान सभा की बैठक सभा मण्डप, लखनऊ में 11 बजे दिन में उपाध्यक्ष श्री जगन्नाथ प्रसाद की अध्यक्षता में आरम्भ हुई।

उपस्थित सदस्य---364

अकवर हुसन, श्री
अजब सिंह, श्री (जिला मुजफ्फरनगर)
अजब सिंह, श्री (जिला सहारनपुर)
अजीत सिंह सेठी, श्री
अठई राम, श्री
अनवार अहमद समदनी ,श्री
अब्दुल वहीद, श्री
अब्दुल हफीज, श्री
अब्दुल हलीम खां, यी
अरुण कुमार, श्री
अली असगर हुसन, श्री
अवधेश कुमार श्रीवास्तव, श्री
अवधेश नरायन, श्री
अवधेश प्रसाद, श्री
अवनीश कुमार सिंह, श्री
अवैद्य नाथ, श्री
अशफाक अहमद खान, श्री
अशर्फी लाल यादव, श्री
अश्वनी कुमार चतुर्वेदी 'राकेश', डाक्टर
इन्द्रमणी बड़ौनी, श्री
इसमाईल, श्री
ईशदत्त यादव, श्री
ईश्वर प्रसाद, श्री
उदय नारायण सिंह, श्री
उदय प्रताप सिंह, श्री
उदित नरायन, श्री
उमाकान्त बाजपेई, श्री
ऊदल, श्री
एदल सिंह, श्री
ए0 सी0 ग्राइस, श्री
ओंकार नाथ, श्री
ओंकार सिंह, श्री
ओम प्रकाश, श्री (उर्फ राम मिलन सिंह)
ओम प्रकाश सिंह, श्री
औसान सिंह, श्री
कन्हई सिंह, श्री
कन्हैयालाल गुप्त, श्री
कन्हैया लाल सोनकर, श्री
कमल किशन पाण्डेय, श्री
कमला प्रसाद वर्मा, श्री
कमला प्रसाद सिंह, श्री
करन सिंह, श्री
कल्पनाथ सिंह, श्री
कल्याण सिंह, श्री
काजी मोहम्मद मुहिउद्दीन, श्री
काली चरण, श्री
कासिम हसन, श्री
किशन लाल, श्री
किशन लाल दिलेर, श्री
कुदसिया बेगम, श्रीमती
कृपा शंकर आर्य, श्री
कृष्ण कान्त मिश्र, श्री
कृष्ण कुमार पालीवाल, श्री
कृष्ण स्वरूप, श्री
कृष्णा राय, श्री
केशरी नाथ त्रिपाठी, श्री
कैलाश नाथ सिंह, श्री
कौशल किशोर, श्री
खान गुफरन जाहिदी, श्री
खान मोहम्मद आतिफ खां, श्री
ख्याली राम शास्त्री, श्री
गंगा प्रसाद, श्री
गंजी प्रसाद, श्री
गजेन्द्र सिंह, श्री
गणेशदत्त बाजपेयी, श्री
गया प्रसाद मेहरोत्रा, श्री (उर्फ मन्ने बाबू)
गिरधारी लाल, श्री
गिरीश चन्द्र तिवारी, श्री

गुन्जेश्वर, श्री
गुरुदत्त सोलंकी, श्री
गुरु प्रसाद, श्री
गुलाब सेहरा, श्री
गेंदा लाल गुप्त, श्री
गोकरन प्रसाद, श्री
गोविन्दसिंह नेगी, श्री
गोविन्द सिंह मेहरा, श्री
गौरी देवी, श्रीमती
गौरी शंकर एडवोकेट, श्री
चन्द्रपाल, श्री
चन्द्रपाल सिंह, श्री
चन्द्रभान मौर्य, श्री
चन्द्रभूषण सिंह, श्री
चन्द्रशेखर सिंह, श्री
चन्द्रसेन सिंह, श्री
चेतराम गंगवार, श्री
चौधरी नौनिहाल सिंह, श्री
छज्जू सिंह, श्री
छेदा सिंह चौहान, श्री
छेदी, श्री (उर्फ छेदी लाल)
छोटे लाल, श्री
छोटे लाल 'निर्भय, श्री
जंगबहादुर सिंह पटेल, श्री
जगदम्बा प्रसाद सिंह, श्री
जगदीश, श्री
जगदीश प्रसाद, श्री
जगदीश प्रसाद त्रिवेदी, श्री
जगदीश सिंह, श्री
जगन्नाथ प्रसाद, श्री
जगन्नाथ सिंह परमार श्री
जनार्दन प्रसाद ओझा, श्री
जयराम, श्री
जय शंकर पाण्डेय, श्री
जसबीर सिंह, श्री
जवाहर लाल, डाक्टर
जागन सिंह, श्री
जागेश्वर, श्री
जितेन्द्र कुमार अग्रवाल, श्री
जौहरी लाल त्रिवेदी, श्री
ज्ञानेन्द्र स्वरूप, श्री
झामलाल अहेरवार, श्री
डी० पी० बोरा, श्री
तेजभान सिंह, श्री
तेजभान सिंह, कुंवर
तेजसिंह, श्री
त्रिवनी सिंह, श्री
दयाराम मास्कर, श्री
दिनेश चन्द्र रस्तोगी, श्री
दिवाकर विक्रम सिंह, श्री
दीप नरायन, श्री
दुक्खी प्रसाद, श्री
देवकीनन्दन, श्री
देव कुमार यादव, श्री
देवबहादुर सिंह, श्री
देवराम, श्री
देवेन्द्रदत्त शास्त्री, श्री
धरम राम, श्री
धर्मदत्त वैद्य, आचार्य
धर्मवीर सिंह, श्री (जिला बिजनौर)
धर्मवीर सिंह, श्री (जिला मेरठ)
धीरेन्द्र सहाय, श्री
नन्द राम, श्री
नन्हे लाल कुरील, श्री
नरेन्द्र सिंह, श्री
नरेश चन्द्र, श्री
नरेशपाल सिंह यादव, श्री
नाथूराम शिक्षक, श्री
नारायण सिंह, श्री
नारायण सिंह भैंसोरा, श्री
नेतराम सिंह, श्री
नेम सिंह चौहान, श्री
पद्माकरलाल श्रीवास्तव, श्री
पुरुषोत्तम कौशिक, श्री
पुरुषोत्तम दास, श्री
पुष्पा तलवार, श्रीमती
पूरन चन्द्र, श्री
पूरन लाल, श्री
प्यारेलाल, श्री
प्यारे लाल शाक्य, श्री
प्रताप सिंह पुष्पवान, श्री
प्रताप सिंह भाटी, श्री
प्रभू दयाल यादव, श्री (एडवोकेट)
प्रेम नारायण अहेरवार, श्री
प्रेमवती, श्रीमती
फजलुलबारी, श्री (उर्फ बन्ने भाई)
बंगाली सिंह, डाक्टर
बच्चा पाठक, श्री

बदन सिंह, श्री
बनारसी दास, श्री
बनारसी दास चाँदना, श्री
बरफियालाल जुवाँठा 'अरविन्द' श्री
बलदेव, श्री
बलबीर सिंह, श्री (जिला मेरठ)
बलबीर सिंह, श्री (जिला मैनपुरी)
बसंत, श्री
बाँके लाल, श्री
बाबू बदरे, श्री
बाबूराम प्रभाती, डाक्टर
बाबु राम वर्मा, श्री
बाबू राम शुक्ल, श्री
बाबू लाल वर्मा, श्री
बाबू लाल विद्यार्थी, श्री
बाबू लाल सरोज, श्री
बाबू सिंह, श्री (जिला अलीगढ़)
बाबू सिंह, श्री (जिला मुजफ्फरनगर)
बाल कृष्ण, श्री
बिन्दू लाल, श्री
बिहारी लाल हंस, श्री
बुद्धूराम सिंह, श्री
बृजबल्लभ सिंह, श्री
बृजलाल, श्री
बेनी प्रसाद माधव, श्री
बजनाथ प्रसाद कुशवाहा, श्री
ब्रजवल्लभ, श्री
ब्रह्मदत्त द्विवेदी, श्री
भगवत दयाल, डाक्टर
भगवती चरण 'निर्मोही', श्री
भगवती प्रसाद सिंह, श्री
भगवानदीन कुशवाहा, श्री
भगवान सिंह, श्री
भारत सिंह, श्री
भामी यादव, श्री
भीमा प्रसाद, श्री
भीषम, श्री
मकबूल अहमद, श्री
मथुरा प्रसाद पाँडेय, श्री
मन्जूर अली खां, श्री (उर्फ शन्नू खां)
मन्जूर अहमद, श्री
मन्ना लाल, श्री
मन्नूराम, श्री
मन्नू लाल द्विवेदी, श्री
मन्सूर अली, श्री
मलिक मोहम्मद कमाल यूसुफ, श्री
मलिखान सिंह, श्री
मसूदुल हसन नोमानी, श्री
महेन्द्र सिंह, श्री
माधव, श्री
मानसिंह आजाद, श्री
मालती शर्मा, श्रीमती
मिठाई लाल, श्री
मित्रसेन, श्री
मुकन्दी सिंह, श्री
मुख्तार अनीस, श्री
मुजफ्फर हसन, श्री
मुफ्ती जलील अहमद, श्री
मुलायम सिंह यादव, श्री
मुश्ताक अहमद, श्री
मूल चन्द्र ठाकुर, श्री
मैनेजर सिंह, श्री
मोअज्जिज अली बेग, डाक्टर
मोती राम, श्री
मोतीलाल दहेल, श्री
मोहन लाल, श्री
मोहनलाल त्रिपाठी, श्री
मोहन सिंह श्री (जिला देवरिया)
मोहम्मद उस्मान, श्री
मोहम्मद रफी खां, श्री
मोहम्मद शमीम अन्सारी, श्री
मौजी लाल कुरील, श्री
रघुवर दयाल वर्मा, श्री
रणजीत सिंह, श्री
रणजीत सिंह 'जूदेव', श्री
रणबीर सिंह, श्री
रफी उल्लाह, श्री
रफीक अहमद खां, श्री
रमा शंकर कौशिक, श्री
रमेश चन्द्र, श्री
रवीन्द्र नाथ तिवारी, श्री
राघव राम मिश्र, श्री
राज किशोर तिवारी, श्री
राज कुमार शर्मा, श्री
राजनाथ सिंह, श्री
राजपति मिश्र, श्री
राजबली तिवारी, श्री
राजमंगल तिवारी, श्री
राजमंगल पाँडेय, श्री
राजेन्द्र चौधरी, श्री

राजेद्र कुमार गुप्त, श्री
राजन्द्र प्रसाद चौधरी, श्री
राजेन्द्र सिंह, श्री
राजन्द्र सिंह यादव श्री
राम अधार यादव, बाबा
राम आसरे, श्री
राम आसरे अग्निहोत्री, श्री
राम आसरे वर्मा, श्री
राम कृष्ण, श्री
राम गोबिन, श्री
राम चरन शाह, श्री
राम जनम, श्री
राम जनम राय, श्री
रामजी, श्री
राम दयाल, श्री
राम दुलारे, श्री
राम देव दुब, श्री
राम नरायन वर्मा, श्री
राम नरेश पाण्डेय, श्री
राम नरेश यादव, श्री
रामपति, श्री
रामप्यारे, श्री
रामफेर कोरी, श्री
राम बक्श, श्री
राम बरन वर्मा, श्री
राम रतन सिंह श्री
राम रति देवी, श्रीमती
राम लखन, श्री
राम लखन दूबे, श्री
राम शिरोमणि दूबे, श्री
राम सजीवन, श्री
राम सरन सिंह, कुंवर
राम सागर, श्री
राम सिंह, श्री
रामेश्वर नाथ चौबे, श्री
राव मुश्ताक अहमद खां, श्री
रियासत हुसैन, श्री
रेवती रमण रस्तोगी, श्री
रेवती शरण मौर्य, श्री
लक्खी सिंह, श्री
लक्ष्मण सिंह श्री
लक्ष्मी नारायन, श्री
लक्ष्मी शंकर यादव, श्री
लाल दास, श्री
लीलवत सिंह, श्री
वंश गोपाल चतुर्वेदी, श्री
वशीर अहमद, श्री
विजय राज सिंह, श्री
विद्याशंकर, श्री
विमला राकेश, श्रीमती
विशुन दयाल, श्री
विश्वनाथ पाण्डेय, श्री
विष्णु प्रताप सिंह, श्री
वीरेन्द्र चतुर्वेदी, श्री.
वीरेन्द्रपति यादव, श्री
शंकर सिंह, श्री
शतरुद्ध प्रकाश, श्री
शफीकुर्रहमान वर्क, श्री
शम्भूनाथ, श्री
शम्भू नाथ चौधरी ,श्री
शशिप्रभा, श्रीमती
शारदा देवी, श्रीमती
शारदा प्रसाद जायसवाल, श्री
शारदा प्रसाद रावत, श्री
शारदा भक्त सिंह, श्री
शिवदास, श्री
शिव प्रसाद, श्री
शिव मंगल सिंह, श्री
शिवलाल मित्तल, श्री
शिवानन्द नौटियाल, श्री
शोवन सिंह जीना, श्री
श्यामदत्त पालीवाल, श्री
श्यामदेव, श्री
श्याम नारायन तिवारी, श्री
श्याम विहारी सिंह, श्री
श्याम सुन्दर गुप्त, श्री
श्रीचन्द्र, श्री
श्रीनारायण, श्री (उर्फ भुलई भाई)
श्रीराम द्विवेदी, श्री
संगम लाल, श्री
संग्राम सिंह, श्री
सखावत हुसैन, श्री
सच्चिदानन्द, श्री
सत्यपाल सिंह यादव, श्री
सत्य प्रकाश, श्री
सन्त बख्श रावत, श्री

सियाराम सागर, श्री
सुखपाल पाण्डेय, श्री
सुदामा प्रसाद गोस्वामी, श्री
सुनीता चौहान, श्रीमती
सुन्दर लाल, श्री
सुन्दर लाल दीक्षित, श्री
सुमेर चन्द गोयल, श्री
सुरेन्द्रपाल, श्री
सुल्तान सिंह, श्री
सूबेदार प्रसाद, श्री
सूरज प्रसाद, श्री
सूर्यनाथ उपाध्याय, श्री
सूर्यमुखी शर्मा, श्रीमती
सोनपाल, श्री (उर्फ सोहन लाल पिपल)
सोहन बीर सिंह तोमर, श्री
सोहन लाल, श्री
स्वरूप कुमारी बक्शी, श्रीमती
हरगोविन्द सिंह, श्री
हर देव सिंह, श्री
हर प्रताप सिंह, श्री
हरिकेवल प्रसाद, श्री
हरि चरन यादव, श्री (एडवोकेट)
हरिपाल सिंह शास्त्री, श्री
हरिश्चन्द्र, श्री (उर्फ हरीश जी)
हरीराम वर्मा, श्री
हरीराम शाक्य, श्री
हरी सिंह, श्री
हाकिम लाल, श्री
हामिद रजा खां, श्री
हिम्मत सिंह, श्री
हुकम चन्द तिवारी, श्री
हुक्म सिंह परिहार, श्री

नोट—हरिजन एवं समाज कल्याण मंत्री श्रीमती चन्द्रावती तथा नियोजन राज्य मन्त्री श्री महिपाल सिंह शास्त्री व सार्वजनिक निर्माण मन्त्री श्री त्रिलोक चन्द भी सदन में उपस्थित थे ।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि

श्री उपाध्यक्ष—

मैं माननीय सदस्यों से प्रार्थना करूंगा कि दो मिनट के लिये खड़े होकर राष्ट्रपिता के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करें ।

(सभी सदस्य दो मिनट के लिए अपने-अपने स्थान पर मौन खड़े हुए ।)

आज प्रश्नों का समय स्थगित किये जाने का प्रस्ताव

मुख्य मंत्री (श्री बनारसी दास)—

उपाध्यक्ष जी, मेरा प्रस्ताव यह है कि आज प्रश्नों के घंटे को स्थगित कर दिया जाय और श्री त्रिलोकी सिंह, जो इस सदन के विरोधी दल के नेता दो दफा रहे हैं, उनके सम्मान में सबसे पहले श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिये आप अनुमति दें । इसके लिये आप सदन की अनुमति ले लें ।

श्री उपाध्यक्ष—

प्रश्न यह है कि आज प्रश्नों का समय स्थगित कर दिया जाय ।

(प्रश्न उपस्थित किया गया और सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ ।)

श्री उपाध्यक्ष—

प्रश्नों का समय स्थगित किया गया ।

भूतपूर्व सदस्य, श्री त्रिलोकी सिंह के निधन पर शोकोद्गार

*मुख्य मंत्री (श्री बनारसी दास)—

श्रीमन्, काल के क्रूर हाथों से माननीय त्रिलोकी सिंह जी नहीं बच सके । श्री त्रिलोकी सिंह राज्य सभा के सदस्य थे और जिनका जीवन इस प्रदेश के सार्वजनिक, राजनैतिक, सामाजिक तथा शैक्षिक सभी दिशाओं से संबंधित था वह आज हमारे बीच में नहीं

[श्री बनारसी दास]

रहे। श्री त्रिलोकी सिंह का जन्म फैजाबाद में सन् 1908 में हुआ था। बाल्य काल से उनकी प्रवृत्ति समाज सेवा और देशभक्ति से प्रेरित थी। श्री त्रिलोकी सिंह की शिक्षा-दीक्षा फैजाबाद में हुई। लखनऊ में आ कर जब से उनको होश हुआ उन्होंने असहयोग और सविनय अवज्ञा आन्दोलन में अपने जीवन को समर्पित कर दिया। महात्मा गाँधी के नेतृत्व में सन् 1930 से लेकर सन् 1942 तक जितने आन्दोलन हुए सबमें श्री त्रिलोकी सिंह अग्रणी रहे और उन्होंने पूरे तौर से इस देश को दासता की श्रृंखलाओं से मुक्त करने के लिये अपने जीवन को समर्पित किया और सन् 1931 से ही वह जिला कांग्रेस कमेटी के महा सचिव रहे और उनके बाद दो दफा अध्यक्ष रहे और चिरकाल तक लखनऊ कांग्रेस संगठन के नेता रहे। 1926 से वह अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य निरन्तर रहे और श्री त्रिलोकी सिंह जिला बोर्ड के अध्यक्ष भी रहे और इस विधान सभा के सदस्य वह सर्वप्रथम सन् 1946 में निर्वाचित हुए थे। जब आचार्य कृपालानी और स्वर्गीय श्री रफी अहमद किदवई ने जन कांग्रेस की स्थापना की और जो बाद में किसान मजदूर प्रजा पार्टी में परणित हो गयी तो श्री त्रिलोकी सिंह उससे सम्बद्ध रहे। वह 1950 से 1952 तक व 1952 से 1962 तक विधान सभा में रहे। मुझे उस समय भी और उससे पहले भी उनके सम्पर्क में आने का सौभाग्य मिला था। फिर सन् 1957 में वे इस सदन के सदस्य निर्वाचित हुये और सन् 1950 से लेकर 1952 तक तथा 1957 से 1962 तक नेता विरोधी दल भी रहे बाद में वे प्रजा समाजवादी पार्टी में शामिल हो गये थे। वे इस प्रदेश में बहुत समय तक यहाँ पर प्रदेश के कांग्रेस के अन्दर मंत्री, उपाध्यक्ष भी रहे और प्रजा समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष भी वे काफी समय तक रहे। वे यहाँ महिला विद्यालय के अध्यक्ष भी रहे और जिला विकास परिषद् तथा जिला बोर्ड के भी अध्यक्ष वे रहे। श्री त्रिलोकी सिंह का इस प्रदेश के और खासकर इस लखनऊ नगर के साथ बहुत गहरा सम्बन्ध था। वे राज्य सभा के सदस्य भी दो बार निर्वाचित हुए और मृत्यु के समय भी वे राज्य सभा के सदस्य थे। श्रीमन्, उनके उठ जाने से इस प्रदेश के सामाजिक जीवन में जो क्षति हुई है उसकी पूर्ति करना अत्यन्त कठिन है और यह वास्तव में हम सब लोगों के लिए अत्यन्त दुख का विषय है कि एक के बाद एक वह व्यक्ति जिन्होंने महात्मा गाँधी के आवाहन पर निःस्वार्थ सेवा का व्रत लिया था और अपने जीवन के त्याग, तपस्या और कार्यकलापों से इस प्रदेश को स्वतंत्रता मिली थी आज वे व्यक्ति धीरे-धीरे हमारे बीच से उठते चले जा रहे हैं। मैं श्री त्रिलोकी सिंह जी के प्रति अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुये आपसे अनुरोध करता हूं कि आप हमारी संवेदना और इस पूरे सदन की भावना उनके संतप्त परिवार तक पहुंचा दें।

*श्री राज मंगल पाण्डेय (जिला देवरिया)—

मान्यवर, मैं अपनी और अपने दल की ओर से माननीय नेता सदन ने जो भावनाएं व्यक्त की ह, उनके साथ सम्बद्ध करते हुए उस व्यक्ति के बारे में कहना चाहूंगा जो आज हमारे बीच में नहीं रह। मान्यवर, मेरा उनके साथ 10–12 साल काफी सम्बन्ध रहा है। जिन बातों का जिक्र माननीय नेता सदन ने किया है वे तो अपनी जगह पर हैं, किन्तु उनकी जैसी प्रखर बुद्धि वाला व्यक्ति इस प्रदेश की राजनीति में हमने नहीं देखा। उनमें समस्याओं को पकड़ने की जितनी बड़ी खूबी थी वह कम लोगों में पायी जाती है। उनमें विषम परिस्थितियों में निपटने का अदम्य साहस था। ऐसी समस्याएं उनके सामने आयीं जिन से कोई भी व्यक्ति बिचलित हो सकता है और अपना मानसिक संतुलन उसका खराब हो सकता है लेकिन उन समस्याओं को निपटाने का जो अद्भुत साहस और क्षमता उनमें थी उसकी हम किसी और में कल्पना नहीं कर सकते हैं। ऐसा व्यक्ति जिसका जीवन हमेशा सेवा का रहा हो और सन् 1981 से लेकर आजादी की लड़ाई तक, कोई भी लड़ाई ऐसी नहीं जिसमें उनका योग न रहा हो और वे जेल उसमें न गये हों, वे हमेशा भारत मात

की सेवा में लगे रहे। वे उन व्यक्तियों में से थे जिन्होंने अपनी छाप केवल मानव समाज की सेवा में ही नहीं, शिक्षा संस्थाओं के माध्यम से सेवा करने में ही नहीं बल्कि भारत की राजनीति में और विशेषकर उत्तर प्रदेश की राजनीति में भी स्थान प्राप्त किया है। मान्यवर, वे 10 मार्च, 1908 को फैजाबाद में पैदा हुए थे, और लखनऊ में उनकी शिक्षा-दीक्षा हुई। अपनी प्रवर बुद्धि से उन्होंने राजनीति में प्रवेश किया और उसमें एक स्थान प्राप्त किया। मान्यवर, सर्व प्रथम वे 1946 में चुन कर आये और 1946 से 1952 तक तथा 1957 से 1962 तक इस सदन के सदस्य रहे। वे 1950 से 1952 तक तथा 1957 से 1962 तक नेता विरोधी दल भी रहे। उसके बाद 1967 से 1968 और 1970 से इस पृथ्वी से उठ जाने के समय तक राज्य सभा के सदस्य थे। इस व्यक्ति के उठ जाने से जो उत्तर प्रदेश की राजनीति को क्षति हुई है, उसकी पूर्ति नहीं हो सकती है। ऐसे व्यक्ति के प्रति मेरे दल को गहरा क्षोभ है। इसलिये मैं अपनी और अपन दल की भावनाएं नेता सदन की भावनाओं के साथ सम्बद्ध करते हुये आपसे अनुरोध करूंगा कि आप हमारी ये भावनाएं उनके संतप्त परिवार तक पहुंचा दें।

*श्री गुलाब सेहरा (जिला आगरा)—

श्रीमन्, यह बड़े दुख का विषय ह कि आज बाबू त्रिलोकी सिंह जी को हम लोग श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं। बाबू त्रिलोकी सिंह जी का उत्तर प्रदेश की कांग्रेस और यहाँ की राजनीति में बड़ा प्रमुख स्थान रहा। विशेषरूप से जो व्यक्ति उनसे मिला उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रहा। व्यवहार कुशलता और निर्णय लेने की ऐसी क्षमता मे समझता हूं कि बिरले ही दूसरे व्यक्तियों में देखने को मिलेगी। वह स्वतंत्रता संग्राम सेनानी और जीवनपर्यन्त गाँधी जी के सिद्धान्तों पर आस्था रखने वाले व्यक्ति थे। इसके साथ ही लखनऊ के सामाजिक जीवन में उनका प्रमुख स्थान था। शिक्षा के क्षेत्र में उनका प्रमुख स्थान रहा वह महिला कालेज के अध्यक्ष भी रहे इसके अलावा लखनऊ विश्वविद्यालय की कार्यकारिणी के अनेक वर्षों तक सदस्य रहे और यहाँ के सामाजिक जीवन में उनका बहुत योगदान रहा। 1946 से उनके साथ मेरा सम्पर्क रहा, क्योंकि मेरे पिता जी के साथ वह विधायक थे। 1952 से विशेष रूप से एक मार्गदर्शक की हैसियत से मैं उनसे बात करता रहा। मुझे याद है 1951–52 में जब जनकाँग्रेस बनी कृष्णदत्त पालीवाल जी उनके साथी थ। 1952 से मैं उनसे प्रभावित था जैसे ही कल उनके निधन का समाचार आया विशेष रूप से व्यक्तिगत रूप से मैंने ऐसा महसूस किया कि जैसे मेरे परिवार का कोई बुजुर्ग हमारे बीच से उठ गया।

इस सदन में उनकी भूमिका नेता विरोधी दल की हैसियत से बहुत महत्वपूर्ण रही। 1978 से पहले वह उत्तर प्रदेश काँग्रेस कमेटी के कोषाध्यक्ष थे। 1977 के चुनाव में उनके साथ काम करने का भी मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ था। उनके काम करने की क्षमता और निर्णय लन की क्षमता बड़ी विलक्षण थी। जिस बात में वह आस्था रखते थे उसको पूरी तरह से निभाते थे। वह हमेशा कहते थे कि काँग्रेसजनों को गाँधी जी के सिद्धान्तों के अनुरूप काम करना चाहिये। आज उनके निधन से सामाजिक और राजनीतिक जीवन में एक ऐसी क्षति हुई है, जिसकी पूर्ति निकट भविष्य में संभव नहीं है। सदन के नेता ने जो उनके प्रति भावना व्यक्त की है और नेता विरोधी दल ने जो भावना व्यक्त की है उससे मैं अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं और आपसे निवेदन करता हूं कि हमारे दल की ओर से उनके शोक संतप्त परिवार तक संवेदना पहुंचाने का कष्ट करें।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

*श्री ऊदल (जिला वाराणसी)—

मान्यवर, बाबू त्रिलोकी सिंह "बाबू जी" जिनको मैं समझता हूं उनसे जो ज्यादा उम्र के लोग भी थे वह उनका नाम नहीं लेते थे बल्कि बाबू जी ही कहते थे। हम सब लोग जैसा कि आप भी जानते हैं उन्हीं लोगों में से है, जो उनका नाम नहीं लेते थे। तो ऐसे सम्मानित व्यक्ति को हम आज श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं। श्रीमन्, बाबू त्रिलोकी सिंह से मेरी भी जान पहचान पिछले 25 वर्षों से रही। ऐसा विलक्षण व्यक्ति मैंने आज तक नहीं देखा। नता विरोधी दल की हैसियत से जिस तरह तीखा प्रहार वह सरकार के ऊपर करते थे, उसके बाद वह व्यवहार में बड़े उदार थे ऐसा व्यक्ति मैं समझता हूं ढूंढ़ने से मिलने वाला नहीं है। श्रीमन्, कठिन से कठिन वक्त में उन्होंने जिस साहस का परिचय दिया है और जैसा गुलाब सेहरा जी ने कहा कि कठिन से कठिन समस्याओं को ठन्डे दिल से उन्होंने हमेशा हल करने की कोशिश की है। श्रीमन्, हमारे देश को आजादी दिलाने में त्रिलोकी सिंह जी की जो महान् भूमिकाएं हैं उनको भुलाया नहीं जा सकता है। जिस वक्त हिन्दुस्तान की आजादी का इतिहास लिखा जायगा उसमें बाबू त्रिलोकी सिंह का नाम स्वर्णक्षरों में लिखा जायगा। आज उनके उठ जाने से हमारे प्रदेश की और देश की महान क्षति हो गयी है, हालाँकि उनकी उम्र अच्छी हो गयी थी, 72 साल के करीब थी, लेकिन फिर भी आज उनके जैसे व्यक्ति की बड़ी आवश्यकता थी। आज हमारा देश और प्रदेश हर संकट से गुजर रहा है। हिन्दुस्तान की राजनैतिक स्थिति अस्थिर और डाँवाडोल है और देश और समाज कैसे बढ़ेगा, ऐसे समय में बाबू जी का उठ जाना बहुत ही दुखदायी है। मैं समझता हूं कि हिन्दुस्तान की राजनीति में ऐसी कमी आ गयी है जो पूरी नहीं हो सकती है। ऐसे समय में हम उनको याद कर सकते थे और जो हमें रास्ता दिखा सकते थे, उनके उठ जाने से बहुत बड़ी क्षति हुई है। इसलिये मैं अपने और अपने दल को माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल, गुलाब सेहरा जी ने जो विचार व्यक्त किये हैं उनसे सम्बद्ध करता हूं और आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि उनके शोक संतप्त परिवार तक हमारी श्रद्धांजलि और सम्वेदना आप पहुंचाने की कृपा करें। मान्यवर, मैं उनके घर गया था, रात में रेडियो से खबर मिली। तो मैं उनके दर्शन कर आया और श्रद्धांजलि दे आया। मैं समझता हूं कि बहुत बड़ी क्षति हुई है और उसका पूरा होना बहुत कठिन है और मैं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से उनको श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

*श्री लक्ष्मी शंकर यादव (जिला जौनपुर)—

माननीय उपाध्यक्ष जी, माननीय नेता सदन, नेता विरोधी दल, गुलाब सेहरा जी और ऊदल जी ने जो विचार बाबू त्रिलोकी सिंह के बारे में प्रकट किये हैं, उनसे मैं अपने आप को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं। मान्यवर, बाबू त्रिलोकी सिंह जी का बड़ा अच्छा व्यक्तित्व था और बहुत बड़े विचारक थे। जैसा कहा गया, वह बड़े हिम्मती थे और कठोर सिद्धान्तवादी व्यक्तित्व उनका रहा है। जो भी वह निश्चय करते थे, उस पर बड़ी हिम्मत के साथ और बड़ी बहादुरी के साथ चलते थे। चाहे जितनी कठिन और उलझन की चीज हो, उस पर निर्णय लेने के बाद ऐसा लगता था कि वह उनके लिए एक सरल कार्य है और उस पर वह बड़ी सरलता से चलते थे। वह बड़े ही व्यवहार कुशल और हंसमुख थे। हमारे प्रदेश क राजनीतिक जीवन और सामाजिक जीवन से उनका गहरा सम्बन्ध था। उनकी याददास्त बड़ी तगड़ी थी। जब भी कभी वह बैठते थ तो वह बहुत सी पुरानी बातों को बताया करते थे वह चाहे आन्दोलन से संबंधित हो या और किसी चीज से सम्बन्धित हों। जैसा नेता विरोधी दल ने कहा कि उनके जैसा व्यक्ति मिलना कठिन है। हमारे प्रदेश के साथ और इस लखनऊ के साथ तो उनका विशेष सम्बन्ध रहा है और उसी का नतीजा है कि वह हर क्षेत्र में चाहे वह शिक्षा संस्था हो या जिला परिषद्

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

ही उनसे उनका सम्बन्ध रहा है। सारे देश की राजनीति से भी उनका सम्बन्ध रहा है। हमारे प्रदेश में तो विशेष रूप से उनकी दिलचस्पी थी। आज तक वह राज्य सभा के सदस्य थे और यहाँ पर वह नेता विरोधी दल भी रहे और उनके सामने बहुत सी कठिनाइयाँ आयीं। यह सही है कि सही रास्ता निकालने में वह जल्द से जल्द निर्णय करने में बहुत तेज रहे और जो निर्णय हो जाता था वह सिद्धान्त की बुनियाद पर होता था और वह उस पर अडिग रहते थे वह उससे हटते नहीं थे। वे बहुत ही हिम्मत वाले, विचारक, सिद्धान्त वाले और एक महान पुरुष थे। उनके निधन से खासतौर से लखनऊ और उत्तर प्रदेश की, वैसे तो पूरे देश की ही, बहुत ही बड़ी क्षति हुयी है, जिसकी पूर्ति होना कठिन लगता है।

मेरा आपसे निवेदन है कि मेरी और हमारे दल की ओर से उनके संतप्त परिवार को संवेदना भेजने का कष्ट करें।

अन्त में मैं पुनः अपनी और अपने दल की ओर से उनकी दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

*श्री राम आसरे वर्मा (जिला हरदोई)—

माननीय बाबू जी के निधन पर माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल, माननीय सेहरा जी, माननीय ऊदल, माननीय यादव जी ने जो विचार व्यक्त किए हैं, उनसे मैं अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं। मान्यवर, विधान सभा का सदस्य बनने के बाद एक दो बार ऐसा अवसर आया जबकि मुझे भी उनसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस समय में उनके व्यवहार की जो छाप मेरे ऊपर पड़ी वह सब इस समय ताजी हो जाती है यही नहीं राजनैतिक और सामाजिक क्षेत्र में उनकी योग्यता हमेशा-हमेशा के लिए स्मरणीय रहेगी। उन्होंने इसी सदन में जो भूमिका नेता विरोधी दल के रूप में निभायी, वह संसदीय इतिहास में अमर रहेगी और हमारी प्रेरणा का स्रोत होगी। आज जिस अनिश्चितता और अस्थिरता का वातावरण देश में गुजर रहा है, इसमें उनके व्यक्तित्व की महत्ती आवश्यकता थी और उनके निधन से एक अभाव पैदा हो गया है जिसकी पूर्ति होना असंभव है। मान्यवर, आपके माध्यम से अपनी ओर से और अपने दल की ओर से आपसे प्रार्थना करता हूं कि आप हमारी श्रद्धांजलि और संवेदना के भाव उनके संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

*श्री रियासत हुसैन (जिला मुरादाबाद)—

श्रीमन्, आज स्वर्गीय बाबू त्रिलोकी सिंह हमारे और आपके बीच में नहीं हैं। उनके प्रति माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल एवं अन्य दलों के माननीय नेताओं ने जो विचार प्रकट किये हैं, उनसे मैं अपने और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं। बाबू त्रिलोकी सिंह में सबसे बड़ी खूबी यह थी कि यदि कोई आदमी को उनसे 5 मिनट मुलाकात करने का मौका मिला होगा तो वे उनको भूलेगा और उनकी तो याददाश्त इतनी अधिक थी कि वे उनको भूलते नहीं थे, फौरन ही उसे पहचान लेते थे और उस आदमी की खासियत को पहचान लेते थे। उन्होंने सदन में अपने विचारों के जरिए देश और प्रदेश की सेवा की है जो हमेशा ही गूंजती रहेगी और सदन के आने वाले लोगों के लिए उनकी तकरीर का खजाना बराबर ही मार्गदर्शन की शक्ल में मिलता रहेगा। मैंने स्वयं जो भी कुछ सीखा है उन्हीं के चरणों में सीखा है। अब मैं ज्यादा न कहकर महज यह कहना चाहता हूं कि श्री त्रिलोकी सिंह लखनऊ की तामीज व तमद्दुन के नमूने और न केवल हिन्दू और मुसलमानों के इत्तिहाद बल्कि इन्सानियत के नमूने थे। उनके निधन से इस देश और प्रदेश में जो इन-चीजों की कमी हुयी है, उनकी पूर्ति होना असम्भव सा है।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री ि यासत हुसैन]

अन्त में, मैं आपसे दर्ख्वास्त करूंगा कि उनके दु:खी परिवार तक मेरे और मेरे दल को ओर से संवेदनाएं पहुंचाने का कष्ट करें ।

*श्री भगवती प्रसाद सिंह (जिला फैजाबाद)—

मान्यवर, आज हमारे बीच में बाबू त्रिलोकी सिंह जी नहीं रहे । बाबू त्रिलोकी सिंह से हमारा सम्पर्क सन् 1951 से तब तक रहा जब तक वे समाजवादी पार्टी से अलग नहीं हुए । बाबू त्रिलोकी सिंह राजनैतिक जगत के ही नहीं, वरन् सामाजिक जगत के भी नायक थे और संसदीय परम्पराओं के तो वे पंडित माने जाते थे । इसी सदन में विरोधी दल के नेता के रूप में वे अपनी एक ऐसी छाप छोड़ गये हैं जो सदा स्मरणीय रहेगी । सरकार पर अपनी वाणी द्वारा ऐसा प्रहार करते थे जो सचमुच में अनुकरणीय है । आज उनके निधन से माननीय सदस्यों के बीच ही नहीं, इस प्रदेश में ही नहीं, वरन् आज सारे दे : में, देश के राजनैतिक और सामाजिक जीवन में, उनकी कमी महसूस हो रही है । मैं माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल तथा अन्य नेताओं ने जो भावनाएं व्यक्त की हैं, उनसे अपने आप को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं और आपसे अनुरोध करता हूं कि हमारी भावनायें शोक सन्तप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

श्री ए0 सी0 ग्राइस (नाम निर्देशित आँग्ल भारतीय)—

उपाध्यक्ष महोदय, मैं बाबू त्रिलोकी सिंह जी को खुद जानता था सन् 1952 से । उस समय वे यहाँ थे । वे इस सदन के विरोधी दल के नेता भी रहे हैं । उनके हमारे बहुत अच्छे सम्बन्ध थे । जब वे एम0 पी0 हो गये तो उनकी कमी इस हाउस में महसूस होने लगी । हम क्रिश्चियन्स के बीच में भी उनकी बडी कमी महसूस हो रही है । हम लोगों को भी उनकी एडवाइस से बड़ा फायदा होता था । हमारे क्रिश्चियन लोग जो अब तक उनकी एड-वाइज से फायदा उठाते रहे, वे अब उससे वंचित रह जायेंगे । वे हमारे बीच से चले गये, इसका हम सभी को बहुत अफसोस है । माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल तथा अन्य दलों के माननीय नेताओं ने जो विचार रखे हैं मैं अपने को भी उससे सम्बद्ध करता हूं । हमारी तरफ से आप उनकी फैमिली को हमारी भावनाएं भेजने का कष्ट करें।

श्री उपाध्यक्ष—

बाबू त्रिलोकी सिंह के निधन से लखनऊ का ही नहीं, उत्तर प्रदेश का ही नहीं, इस देश का सबसे बड़ा नुकसान हुआ है । बाबू त्रिलोकी सिंह एक बहुत अच्छे इन्सान और संसदीय विद्वान थे । वे एक बहुत ही अच्छे सामाजिक कार्यकर्त्ता भी थे । स्वतंत्रता संग्राम में वे सबसे आगे रहे और इस विधान सभा में नेता विरोधी दल के पद पर भी कई वर्ष तक रहे, उनके संस्मरण हम सभी के लिए एक आदर्श और प्रेरणा के स्रोत रहेंगे ।

मेरा बाबू त्रिलोकी सिंह से बहुत ही घनिष्ट सम्बन्ध था और वे मुझे अपने परिवार के एक सदस्य के रूप में तथा अपने एक शिष्य के रूप में मानते थे । जीवन पर्यन्त उनकी मेरे ऊपर बड़ी कृपा रही । उनके दोस्तों और उनके हितैषियों का एक बड़ा समूह केवल उत्तर प्रदेश में ही नहीं, वरन् सारे देश में आज शोक से विह्वल है । उनकी ईमानदारी की एक बात मुझे याद आती है । जब वे सन् 1952 से 1962 तक इस विधान सभा के सदस्य रहे तो वे दारुलशफा में न रहने के कारण नियमानुसार किराया ले सकते थे, किन्तु उन्होंने उसे नहीं लिया । मैंने उनसे एक बार कहा कि बाबू जी, यह तो आप नियमानुसार ले सकते हैं, यदि आप स्वयं नहीं लेते हैं तो आप इसे प्रजा समाजवादी दल को ही दे दें । तो उन्होंने कहा कि मैं पार्टी के लिए बेईमानी नहीं कर सकता । उनकी स्मरण शक्ति बहुत तीव्र थी । एक बार डा0 फरीदी और हम लोग बैठे थे, उनके पास किसी विशेष कार्य के बारे में गये थे, तो अपना वह संस्मरण सुनाने लगे और संस्मरण ही सुनाते रहे तो जिस विषय के बारे में

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

हम लोग गये थे, उस विषय पर हम लोग बात नहीं कर पाये। तो डा0 फरीदी ने कहा कि आप इन संस्मरणों की पुस्तिका छपवा लें तो ज्यादा अच्छा होगा। आज उनके न रहने से सारा प्रदेश दुखी है और उनके जितने हितैषी, मित्र है, सभी दुखी हैं और इस माननीय सदन के तमाम माननीय सदस्यों से उनका राजनैतिक और निजी सम्बन्ध रहा होगा। व्यवहार रहा होंगा। सबके हृदय में उनके लिए पीड़ा है और दुख है और शोक हैं। मैं माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल, माननीय श्री गुलाब सेहरा, माननीय श्री ऊदल, माननीय श्री लक्ष्मी शंकर यादव, माननीय श्री राम आसरे वर्मा, माननीय श्री रियासत हुसैन, माननीय श्री भगवती प्रसाद सिंह और माननीय श्री ए0 सी0 ग्राइस ने जो संवेदना उनके बारे में प्रकट की है, उनके दुखी परिवार तक उनको भेज देंगे। मैं सदन के माननीय सदस्यों से प्रार्थना करूंगा कि दो मिनट के लिए मौन खड़े होकर उनकी आत्मा की शान्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करें।

(सभी सदस्य दो मिनट के लिए अपने स्थान पर मौन खड़े हुए।)

भूतपूर्व सदस्य, कैप्टेन मोहन लाल व श्री अब्दुल मुईज खां के निधन पर शोकोद्गार

*मुख्य मंत्री (श्री बनारसी दास)--

इस सदन के दो महत्वपूर्ण सदस्यों के निधन का भी समाचार मिला है। स्वर्गीय कैप्टेन मोहन लाल, उन्नाव जिले से इस सदन के 1952 में सदस्य निर्वाचित हुए थे। उनका जन्म लाहौर में हुआ था, वहाँ उनकी शिक्षा दीक्षा हुई। वहाँ उन्होंने बी0 ए0 पास किया और भारतीय सेना में शामिल हुए। नेता जी सुभाष चन्द्र बोस के नेतृत्व में आजाद हिन्द फौज में वह शरीक हो गये। देश के विभाजन के बाद वह पुनः यहाँ पर आए। 1952 में वह उन्नाव से इस माननीय सदन के सदस्य निर्वाचित हुए।

दूसरे सदस्य, बस्ती के श्री मुईज खां का निधन 21 दिसम्बर, 1979 को हो गया। उनका जन्म बस्ती में 1 दिसम्बर, 1916 को हुआ था। बस्ती से उन्होंने हाई स्कूल की शिक्षा प्राप्त की और अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय से एम0 ए0, एल-एल0 बी0 पास किया। श्री मुईज खां शुरू से ही राष्ट्र प्रेमी थे। संकीर्णता उनको छू तक नहीं गयी थी। वह राष्ट्रीय संस्थाओं में भी रहे। कभी भी संकीर्ण साम्प्रदायिकता की भावना उनको अपने पद से विचलित नहीं कर सकी। बस्ती के सार्वजनिक जीवन में उनका महत्वपूर्ण योगदान था। वह अन्तरिम जिला परिषद बस्ती के अध्यक्ष रहे और जब जिला परिषद् का गठन हुआ, तब उसके अध्यक्ष निर्वाचित हुए। सन् 1949 से लेकर 1952 तक, इस सदन के सदस्य रहे, दुबारा 1952 से 1957 और 1967 से 1968 तक वह इस विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए। वह अत्यन्त लोकप्रिय और बड़े ही विवेकशील व्यक्ति थे। उनके निधन से इस देश के जीवन में बड़ी क्षति हुई है। श्रीमन, मैं आपसे अनुरोध करूंगा कि सदन की संवेदना स्व0 श्री कैप्टेन मोहन लाल और स्वर्गीय श्री अब्दुल मुईज खां के सन्तप्त परिवारों तक आप पहुंचाने की कृपा करें।

*श्री राज मंगल पाण्डेय (जिला देवरिया)--

मान्यवर, जसा कि नेता सदन ने बताया है, कैप्टेन मोहन लाल जी लाहौर में पैदा हुए थे और बाद म एक राष्ट्र भक्त होने के नाते अंग्रेजों ने देश में जो अत्याचार किए थे उससे पीड़ित होकर नेता जी की फौज में शामिल हो गये और देश के लिए जो कुछ कर सके, किया। मान्यवर, उनकी शिक्षा दीक्षा लाहौर में हुई। मान्यवर, कैप्टेन मोहन लाल जी जहाँ पैदा हुए और जहाँ जीवन शुरू किया वहाँ उन्होंने अपने जीवन की एक अमिट छाप छोड़ी। मान्यवर, उनके निधन से हमें और हमारे दल को बहुत दुःख है और मैं चाहता हूं कि हम लोगों की भावनाएँ उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचा दें।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री राज मंगल पाँडेय]

मान्यवर, दूसरे सदस्य, श्री अब्दुल मुईज खां 1916 में पैदा हूए। मान्यवर, वह बड़े राष्ट्र-भक्त थे। केवल बस्ती में ही नहीं अलीगढ़ जहाँ से उन्होंने एम0 ए0 की परीक्षा पास की, उन्होंने अपनी अमिट छाप छोड़ी है। आज भी जो उनको व्यक्तिगत रूप से जानते हैं उनकी चर्चा करते हैं और बतलाते है कि आज ऐसे समय में ऐसे लोगों की इस देश को जरूरत है जबकि यह देश उन लोगों की विचारधाराओं से जो देश को टुकड़े-टुकड़े में बाँट देना चाहते हैं, मान्यवर, श्री अब्दुल मुईज खां सन् 1952 से 1957 तक तथा 1962 से 1967 तक इस सदन के सदस्य रहे। मान्यवर, उनका सम्बन्ध कई संस्थाओं से रहा है वे जिला परिषद्, बस्ती के अध्यक्ष रहे, वे जहाँ भी रहे उनका कार्य बड़ा सराहनीय रहा। ऐसे व्यक्ति के निधन से हमको और हमारे दल को गहरा क्षोभ है। मैं चाहता हूं कि हमारी तरफ से और हमारे दल की ओर से यह संवेदना उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

*श्री गुलाब सेहरा (जिला आगरा)--

श्रीमन, इस विधान सभा के दो भूतपूर्व सदस्यों के निधन पर जो विचार नेता सदन, और नेता विरोधी दल ने व्यक्त किये हैं उससे मैं अपने आपको और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं। कैप्टेन मोहन लाल आजाद हिन्द फौज के सिपाही थे नेता जी के स्वतंत्रता आन्दोलन के एक अग्रणी व्यक्ति रहे। कैप्टेन मोहन लाल जी उन्नाव से चुने गए और इस सदन के सदस्य रहे। दूसरे सदस्य, श्री अब्दुल मुईज खां राजनीतिक जीवन में, सामाजिक जीवन मे बस्ती के उन लोगों में से रहे जिन्होंने राजनीतिक जीवन और सामाजिक जीवन में कुछ अविस्मरणीय कार्य किया। बस्ती के जन-जीवन में उनका एक अग्रणी स्थान था, जिला परिषद् अध्यक्ष रहे, अन्य कई पदों पर रहते हुए मृत्यु के वक्त तक रेलवे बोर्ड के मेम्बर थे। इन दो सदस्यों, जिनका राजनैतिक, सामाजिक जीवन में बहुत योगदान रहा था उनके निधन पर श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और नेता सदन ने जो भावनाएं व्यक्त की है और नेता विरोधी दल ने जो भावनाएं व्यक्त की है उनसे अपने दल और अपने को सम्बद्ध करता हूं और आपसे आशा करता हूंकि आप हमारी भावनाएं उनके शोक संतप्त परिवारों तक पहुंचाने का कष्ट करेंगे।

*श्री ऊदल (जिला वाराणसी)--

कैप्टेन मोहन लाल व स्व0 अब्दुल मुईज खां के बारे में जो विचार माननीय नेता सदन, नेता विरोधी दल, श्री गुलाब सेहरा जी ने व्यक्त किये हैं, मैं उनसे अपने को और अपने दल को सम्बन्ध करता हूं कि इन दोनों शोक सन्तप्त परिवारों तक मेरी श्रद्धांजलि पहुंचाने की कृपा करें।

*श्री लक्ष्मी शंकर यादव (जिल जौनपुर)--

मान्यवर, माननीय नेता सदन, नेता विरोधी दल तथा अन्य दलों के नेताओं ने जो विचार कैप्टेन मोहन लाल व श्री मुईज खां के निधन के सिलसिले में व्यक्त किए हैं। उससे मैं अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं। कैप्टेन मोहन लाल, आजाद हिन्द फौज में रहे और विधान सभा के सदस्य भी रहे तथा श्री मुईज खां जी ने भी विभिन्न क्षेत्रों में कार्य किये हैं, जिला परिषद् और रेलवे बोर्ड के सदस्य भी रहे। वे जहाँ भी रहे उस क्षेत्र में अपने कर्त्तव्यों का पालन पूरी निष्ठा के साथ करते रहे। आज वास्तव में ऐसे नेताओं की हमारे देश में बहुत आवश्यकता है। लेकिन चूंकि इनकी आवश्यकता है इसलिए वही साथ छोड़ कर चले जा रहे हैं। मैं इन दोनों व्यक्तियों के निधन पर अपनी तरफ से और अपने दल की तरफ से उनके दिवंगत आत्माओं के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे निवेदन करूंगा कि इन दोनों शोक सन्तप्त परिवारों तक मेरी संवेदना भेजने की कृपा करें।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

*श्री राम आसरे वर्मा (जिला हरदोई)—

मान्यवर, स्व0 कैप्टेन मोहन लाल और स्व0 मुईज खां के निधन पर माननीय नेता सदन, मा0 नेता विरोधी दल, सेहरा जी, ऊदल जी तथा श्री यादव जी ने जो भाव व्यक्त किये हैं, उनके साथ मैं अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं और आपसे अनुरोध करूंगा कि मेरी ओर से समवेदना और श्रद्धांजलि उन शोक सन्तप्त परिवारों तक पहुंचाने की कृपा करें।

*श्री रियासत हुसैन (जिला मुरादाबाद)—

स्व0 कैप्टेन मोहन लाल, स्व0 श्री अब्दुल मुईज खां के निधन पर जो माननीय नेता सदन तथा अन्य दलों के नेताओं ने जो विचार प्रकट किए हैं, उनसे मैं अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं और आपसे अनुरोध करता हूं कि मेरी तरफ से और मेरे दल की समवेदना शोक सन्तप्त परिवारों तक पहुंचाने की कृपा करें।

*श्री भगवती प्रसाद सिंह (जिला फैजाबाद)—

मान्यवर, माननीय नेता सदन, नेता विरोधी दल तथा अन्य दलों के नेताओं ने जो इन मृत सदस्यों के प्रति अपनी-अपनी भावनाएं प्रकट की हैं, उनसे मैं अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करते हुए आपसे प्रार्थना करूंगा कि उन शोक सन्तप्त परिवारों तक मेरी श्रद्धांजलि भेज दें।

श्री उपाध्यक्ष—

कैप्टेन मोहन लाल और श्री अब्दुल मुईज खां, दोनों इस सदन के सदस्य रहे हैं और अपने-अपने जिलों में अच्छे कार्यकर्त्ता थे। इनके निधन से उन जिलों को विशेष क्षति हुई है। उनके बारे में माननीय नेता सदन, नता विरोधी दल, नेता कांग्रेस (आई), श्री गुलाब सेहरा, श्री ऊदल, श्री लक्ष्मी शंकर यादव, श्री राम आसरे वर्मा, श्री रियासत हुसैन और श्री भगवती प्रसाद सिंह ने जो समवेदना व्यक्त की हैं उसको मैं उनके सन्तप्त परिवारों को भेज दूंगा।

अब उनकी स्मृति में 2 मिनट के लिए मौन खड़े होकर भगवान से उनकी आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना करें।

(सभी सदस्य दो मिनट के लिए अपने-अपने स्थान पर मौन खड़े हुए।)

स्व० श्री त्रिलोकी सिंह के सम्मान में सदन स्थगित किये जाने का प्रस्ताव (स्वीकृत)

मुख्य मंत्री (श्री बनारसी दास)—

मान्यवर, मैं आपके द्वारा सदन को सूचित करना चाहता हूं कि श्री त्रिलोकी सिंह का दाह-संस्कार पूर्ण राष्ट्रीय सम्मान के साथ मैंसा कुण्ड में होगा और उनकी शव-यात्रा साढ़े बारह बजे उनके निवास स्थान से शुरू होगी। माननीय सदस्यों से अनुरोध है कि वे उनकी शव यात्रा में सम्मिलित होने का कष्ट करें। मेरा यह प्रस्ताव है कि उनके सम्मान में यह सदन आज स्थगित कर दिया जाये, क्योंकि सदन के माननीय सदस्यों की यह इच्छा थी।

31 तारीख को छुट्टी है और पहली, दूसरी तथा तीन फरवरी को छुट्टी है। इसलिए फिर 4 तारीख को सदन बैठे।

श्री उपाध्यक्ष—

प्रश्न यह है कि यह सदन मुख्य मंत्री जी द्वारा किये गये प्रस्ताव से सहमत है।

(प्रश्न उपस्थित किया गया और स्वीकृत हुआ।)

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

श्री उपाध्यक्ष—

तो आज की जितनी कार्यवाही है उसको हम 4 को लेंगे और 4 को ही साढ़े नौ बजे कार्य-मंत्रणा समिति की बैठक अपने यहाँ आगे के कार्यक्रम के लिये करेंगे।

अब हम उठते हैं 4 फरवरी को 11 बजे फिर बैठेंगे।

(इसके बाद सदन 11 बजकर 47 मिनट पर सोमवार, 4 फरवरी, 1980 के 11 बजे तक के लिए स्थगित हो गया।)

लखनऊ:
30 जनवरी, 1980

सत्य प्रिय सिंह,
सचिव, विधान सभा
उत्तर प्रदेश।

पी० एस० यू० पी०-एल० 498 विधान सभा (923)—1980—835।